PATNA WOMEN'S COLLEGE 1940

Philosophy
Explore–Journal of Research
ISSN 2278 – 0297 **(Print)**
ISSN 2278 – 6414 **(Online)**
© Patna Women's College, Patna, India
http://www.patnawomenscollege.in/journal

गीता के निष्काम कर्म की प्रासंगिकता : आधुनिक युग के परिपेक्ष्य में

• श्रेया राज • काजल कुमारी • सुष्मिता कुमारी
• अमिता जायसवाल

Received : November 2016
Accepted : March 2017
Corresponding Author : Ameeta Jaiswal

Abstract : गीता भारतीय दर्शन की आधारशिला है। हिंदु शास्त्रों में गीता का सर्वप्रथम स्थान है। गीता कर्म योग का प्रधाान ग्रंथ कहा गया है। कर्मयोग दो शब्दों के मेल से बना है कर्म और योग। कर्म का अर्थ कर्त्तव्य और योग का अर्थ आत्मा का परमात्मा से मिलन अर्थात् मनुष्य को ऐसा कर्म करना चाहिए जिससे उसका मिलन ईश्वर से हो जाए। वास्तव में कोई भी मनुष्य कर्म के बिना नहीं रह सकता। यदि कर्म न हो तो न समाज शेष रहेगा न ही व्यक्ति। गीता स्वार्थ से रहित कर्मों को करने के लिए प्रेरित करती है। कर्म के लिए गीता में धर्म का पालन आवश्यक माना गया है पर कोई भी कर्म करने के लिए यह स्मरण रखना आवश्यक है कि कर्मों का कर्त्ता मैं नहीं हूँ।

श्रेया राज
B.A. III year, Philosophy (Hons.), Session: 2014-2017,
Patna Women's College, Patna University, Patna,
Bihar, India

काजल कुमारी
B.A. III year, Philosophy (Hons.), Session: 2014-2017,
Patna Women's College, Patna University, Patna,
Bihar, India

सुष्मिता कुमारी
B.A. III year, Philosophy (Hons.), Session: 2014-2017,
Patna Women's College, Patna University, Patna,
Bihar, India

अमिता जायसवाल
Head, Department of Philosophy,
Patna Women's College, Bailey Road,
Patna – 800 001, Bihar, India
E-mail : ajphilpwc@gmail.com

''कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।
मा कर्मफलहेतुभूर्मा ते संङ्गोऽस्त्वकर्मणि ॥
॥ गीता-**2/47**

अर्थात् तेरा कर्म करने में ही अधिकार है, उसके फलों में कभी नहीं। इसलिए तू कर्मों के फल का हेतु न हो तथा तेरी उसमें आसक्ति भी न हो। कर्म फल की आकांक्षा को दूर करना और अकर्म मान्यता से बचाने पर निष्काम कर्मवाद बनता है। अतः निष्काम कर्म से ही संसार की गति बनी रहेगी और विश्व में सुख, शांति और समृद्धि की स्थापना हो सकती है। इसी उद्देश्य के साथ हमने इस शोध कार्य को सम्पन्न किया है।''

Keywords: **निष्काम कर्म, कर्मयोगी, कृतप्रणाश, अकृताभ्युपगम्।**

परिचय :

कर्मवाद का सिद्धांत भारतीय दर्शन का आधारभूत सिद्धांत है। भारतीय विचारधारा से इसे ईश्वरवाद एवं आत्मवाद से भी अधिक महत्त्व प्राप्त हुआ है। कर्मवाद के दो अंग है कर्म क्रिया रूप में और कर्मवाद सिद्धांत रूप में। चार्वाक को छोड़कर भारत के सभी दर्शन चाहे वह वेद-विरोधी हो कर्म के नियम को मान्यता प्रदान करते हैं। ईश्वरवाद को नास्तिक तो नहीं मानते कुछ अग्रणय आस्तिक भी नहीं मानते, परंतु कर्मवाद को सभी मानते हैं। कर्मवाद के सिद्धांत की पृष्ठभूमि में भारतीय दर्शन की यह मान्यता निहित है कि विश्व में एक शाश्वत नैतिक व्यवस्था है। कर्मवाद के अनुसार मनुश्य जो करता है, उसका फल वहीं भोगता है।

कर्मवाद का अर्थ है- ''जैसा हम बोते हैं वैसा ही हम काटते हैं।'' इस नियम के अनुकूल शुभ कर्मों का फल शुभ और अशुभ